१०३. मानव में सामर्थ्य

०२-०९-२०१३

मानव ही ज्ञानार्जन करने में समर्थ है और प्रमाणित करने में समर्थ है

मानव का ज्ञानार्जन पहले भास- आभास विधि से कल्पना में, ज्ञान दूसरा स्थिति में जीवों से अच्छा जीते हुये प्रमाणित होना, तीसरी स्थिति में विकसित चेतना में जी पाना | तीसरी स्थिति अभी तक खाली है, दो स्थिति पूरा हो गया है | सर्वप्रथम मानव जीवों के सदृश जीने लगा | जीवों के साथ संघर्ष किया | क्रमागत विधि से मानव के साथ संघर्ष की स्थिति बनी | मानव-मानव के साथ संघर्ष करते हुए जीवों से अच्छा जीने के लिये सोचा | सोचते-सोचते जीवों से अच्छा खाना जीवों से अच्छा घर, सड़क, सेतु, महासेतु ये सब बन गये | आकाश मार्ग भी बना, भू मार्ग भी बना | इसी के साथ-साथ जल मार्ग भी बन गये | जीवों से अच्छा जीना भी हो गया | मानव-मानव के साथ संघर्ष करना बना है | संघर्ष मुक्ति चाहिए | यही भ्रम-मुक्ति, अपराध-मुक्ति ही आगे सोच का आधार है | मानव अनुसंधान, शोधपूर्वक जीने वाला है | व्यक्ति पहले किया का शोध एवं स्वयं से अनुसंधान की सम्भावना बनी है | इसी क्रम में अनुसंधानपूर्वक विकल्प प्रस्तुत है | अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन रूप में अनुसंधान हुआ | इसका प्रयोजन मानव ही समझने वाला है |

मानव ही ज्ञान का धारक वाहक होना समझ में आया | ज्ञानपूर्वक जीने से संघर्ष-मुक्ति, अपराध-मुक्ति और गलतियों से मुक्ति होना पाया जाता है | गलतियों के रूप में मानव लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद को अपनाया है | ये तीन प्रकार के उन्माद को सही मान लिया | ये क्रमागत विधि से ही माना गया है | जंगल युग से चला हुआ आदमी ही इन तीनों उन्माद को माना | जंगल युग से चलकर शिला युग, शिला युग से चलकर धातु युग, धातु युग से चल कर बारूद युग, बारूद युग से चलकर मिसाइल युग तक मानव प्रशस्त हुआ | यह क्रम से जीव जगत के साथ संघर्ष करते हुए मानव के साथ संघर्ष किया | मानव के साथ संघर्ष करने के लिये समुदाय चेतना की आवश्यकता आई | इस विधि से समुदाय चेतना तैयार हुआ | हर समुदाय मानव के साथ संघर्ष के लिये तैयार होता है, संघर्ष करता है | अभी तक बनी हुई विधियों के अनुसार मिसाइल युग फ़िशन-फ्यूजन के आधार पर बना | इन दोनों प्रकार से प्रयोग पूरा हो गया | इसका प्रयोग सामरिक तंत्र में शामिल होकर प्रवर्तनशील है | ज्यादा सामरिक तंत्र जिसके पास है, वही दादागिरी करता है | इस क्रम में व्यापार भी शामिल है | व्यापार विधि से अपने को समर्थ बनाता है | क्रमिक विधि से समर तंत्र में प्रमाणित होता है | यही दादागिरी का आज की स्थिति में आधार है | दादागिरी सदा के लिये व्यक्तिवाद है |

व्यक्तिवाद, समुदायवाद के साथ जुड़ कर अपना वैभव को बताना चाहता है | सारा वैभव अपराध और उन्माद में अंत हो गया | उन्माद त्रय, अपराध द्वय इसको वैध मान लिया | इसे वैध रूप में हर संविधान मान लिया | इसी को वैध मानने के क्रम में एक समुदाय दूसरे समुदाय का अस्तित्व को स्वीकारता है | एक समुदाय, दूसरे समुदाय को स्वीकारना ही सार्वभौमता का आधार है, अखण्डता का आधार है | एक दूसरे को मानना ही सार्वभौमता, अखण्डता का आधार हुआ | ज्ञान रूप में अखण्डता, सार्वभौमता की आवश्यकता रही | ज्ञान को अखण्ड रूप मानने वालों में से एक आध्यात्मवाद है | सार्वभौमता के रूप में इसे मानते हुए शोध और अनुसंधान विधि से चलने की मनसा व्यक्त हुयी | यह आगे अनुसंधान का आधार बना | हर आदर्शवाद, अखण्डता और सार्वभौमता को स्वीकारता है | इसी क्रम में स्वीकारा हुआ मान्यताएं आज भी स्पष्ट हैं | इसका

मतलब यही है, एक समुदाय दूसरे समुदाय का अस्तित्व में होना स्वीकारना ही है | इस क्रम से व्यक्तिवाद ही संघर्ष और युद्ध के लिये आधार हुआ, अपराध के लिये आधार हुआ; अपराध व्यक्तिवादी है | समुदायवाद में युद्ध है | समुदायवाद के अलावा युद्ध होता ही नहीं | एक से अधिक समूह होने के पश्चात ही परस्परता में विषमता होने की स्थिति में युद्ध होना देखा जाता है | इसे विकास माना | संविधान को मानना विकास माना है | संविधान को नहीं मानना राष्ट्र द्रोह माना है | यह सम्भवतः सभी संविधानों के साथ जुड़ा है | अपने-अपने ढंग से सभी अपराध और युद्ध करने की तैयारी में हैं | युद्ध ही विरोध का अंतिम स्थिति है | इस अंतिम घटना के लिये सभी संविधान प्रयत्न कर रहे हैं | यही मनुष्य का आज का स्थिति में आपत्ति का आधार है | आपत्तियों से जुड़ा हुआ मानव अपने वैभव को प्रतिष्ठित करना चाहता है | इसके लिये प्रधानतः मुख्य बात अस्मिता है |

अस्मिता का मतलब स्वीकारना; अपराध और संघर्ष को स्वीकारना | अपराध और संघर्ष को स्वीकारने के क्रम में ही सामरिक मानसिकता तैयार होता है | अभी की स्थिति में जीवों के साथ संघर्ष करना कम है | मानव-मानव के साथ संघर्ष करना अधिक है | इसी क्रम में सर्वाधिक रूप में सामरिक तंत्र के लिये तूल देना बना | तूल देने का मतलब प्राथमिकता बनाना | सामरिकता प्राथमिकता के रूप में स्वीकार होना ही विकास माना गया है | संघर्ष को विकास माना | इस क्रम में मानव सभी प्रकार से अपराध करने के लिये तैयार हुआ | सभी संविधान सामरिकता स्वीकारा | ऐसे सामरिक तंत्र को स्वीकारना ही, एक दूसरे के साथ मैत्री न स्वीकारना ही द्वेष की बात है | इस आधार पर अर्थात मैत्री और विरोध पर आधारित सामरिक तंत्र हुआ | सामरिक तंत्र विधि से एकता को प्रदर्शित करना मित्र राष्ट्रों को माना गया है | इस क्रम में मानव हर देश काल में सामरिकता के लिये तैयार होना एक मजबूरी हुई | ये जीवों से अच्छा जीने के क्रम में आ गये हैं | इसमें सफल भी हो गये हैं | इसी को अंतिम मुद्दा माना अभी तक | जबकि विकल्प विधि से भ्रम और अपराध मुक्ति के लिये प्रस्ताव है |

इसके मूल में हर व्यक्ति को समझदार होने की अपेक्षा को स्वीकारा | अपराध और भ्रम से मुक्त होना ही चाहता है मानव, ऐसा माना है विकल्प | इस क्रम में चलता हुआ मानव विकल्पात्मक अध्ययन की जगह में आ गया है | अभी यह हजारों में अध्ययन करने के रूप में है | करोड़ों में होना शेष है | यह लोकव्यापीकरण होने की स्थिति में करोड़ों में अध्ययन करने वाले होंगे | इस विधि से जीने के क्रम में विकल्प कहा है | विकल्प विधि से अपराध-मुक्ति, भ्रम-मुक्ति दो भाग हुआ | अपराध-मुक्ति में कहा है युद्ध और संघर्ष | भ्रम मुक्ति में कहा है तीन प्रकार के उन्माद | इन तीनों प्रकार के उन्माद, दो प्रकार केअपराध मुक्त होने के प्रमाण में अनुभव प्रमाण, अनुभव सम्मत विचार प्रमाण, विचार सम्मत कार्य-व्यवहार प्रमाण को परम्परा के रूप में स्वीकारा है, जिसमें हर व्यक्ति समानाधिकार सम्पन्न है | विकल्प विधि से हर व्यक्ति भी समानाधिकार होना समझ में आता है | समानाधिकार सम्पन्नता में कहा है, तीनों प्रकार के प्रमाण सम्पन्नता | यही समझदारी का प्रधान प्रमाण है | यही अखण्डता सार्वभौमता का आधार है | अखण्डता में मानव जात एक होना बताया गया है | सार्वभौमता में सर्वमानव व्यवस्था में भागीदारी होना बताया | इस विधि से अखण्डता, सार्वभौमता हर व्यक्ति का अधिकार हुआ | इसमें अधिकार से व्यक्तिवाद होने से मुक्ति मिली |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- ए. नागराज